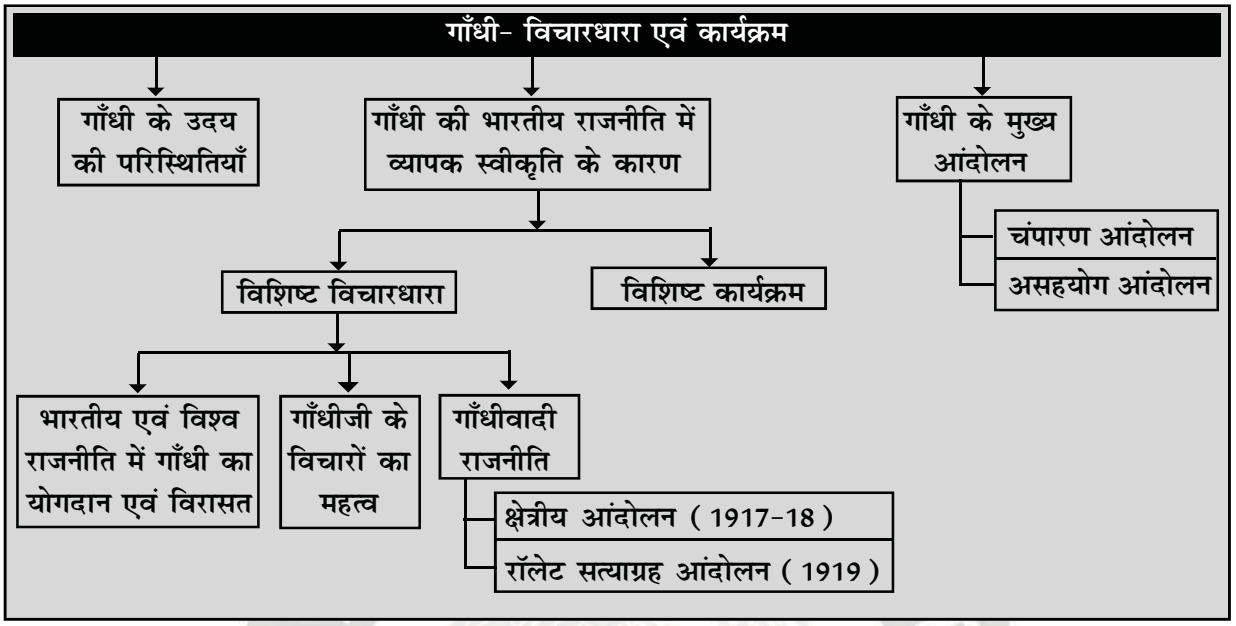

- गाँधीजी ने अपना राजनीतिक जीवन दक्षिण अफ्रीका से शुरू किया था। वे 1915 ई. में प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारत आए थे। आरंभ में उन्होंने ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग की नीति अपनाई तथा लोगों से यह अपील की कि ब्रिटिश सरकार को अधिक से अधिक सहायता दें और बढ़-चढ़कर सेना में भर्ती हों। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ही उन्होंने चंपारण, अहमदाबाद और खेड़ा जैसे आंदोलनों में हिस्सा लेकर अपनी पहचान बनाई, फिर प्रथम अखिल भारतीय आंदोलन रॉलेट सत्याग्रह में शामिल हुए।

गाँधी के उद्‌भव की परिस्थितियाँ

- गाँधी के आगमन के समय एक राजनीतिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न हो चुकी थी। कांग्रेस का उदारवादी कार्यक्रम जनता के बीच अपना विश्वास खो चुका था तथा उग्रवादी नेता एक जनआन्दोलन लाने में विफल रहे थे। इसलिए भारतीय राजनीति में गाँधीजी का उद्‌भव अपेक्षाकृत आसान था।
- भारत आगमन से पहले ही गाँधी जी ने अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली थी। दक्षिण अफ्रीका में ही उन्होंने अंहिसा और सत्याग्रह की तकनीक, रचनात्मक कार्यक्रम सभी तकनीकों को विकसित कर लिया था। इसलिए भारत में स्वीकृति मिलने में उन्हें आसानी हुई।
- प्रथम विश्व युद्ध ने भारत में विभिन्न सामाजिक वर्गों को प्रभावित किया। पूँजीपति वर्ग प्रथम विश्व युद्ध के मध्य औद्योगिक वस्तुओं पर करारोपण तथा युद्ध के पश्चात् की अनिश्चितता से विक्षुब्ध थे, जबकि श्रमिक वर्ग उद्योगों में छँटनी के खतरे को झेल रहे थे। उसी प्रकार, धनी किसान कृषि वस्तुओं के मूल्यों में गिरावट से परेशान थे, जबकि निम्न वर्गीय किसान भुखमरी और अकाल की समस्या से ग्रस्त थे। इसके अतिरिक्त प्रथम विश्व युद्ध के मध्य पहली बार भारत की युवा पीढ़ी ने पाश्चात्य संस्कृति के कुरूप चेहरे को देखा अर्थात् स्वतंत्रता एवं प्रजातंत्र को जन्म देने का दावा करने वाले देश किस प्रकार मानव के विरूद्ध रासायनिक और जैविक युद्धास्त्रों का प्रयोग कर रह थे। यह भी एक वजह है कि गाँधीवादी राष्ट्रवाद को विभिन्न वर्गों का समर्थन प्राप्त हुआ।
- गाँधी के आगमन के समय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी आंदोलन का एक माहौल निर्मित था। उपनिवेशों में इसने साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन का रूप लिया, तो स्वतंत्र देशों में पूँजीवाद विरोधी आंदोलन का। अतः गाँधीवादी आंदोलन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उभर रही इन नवीन वैचारिक शक्तियों से भी प्रोत्साहन मिला।

गाँधी की भारतीय राजनीति में व्यापक स्वीकृति के कारण

गाँधी की विशिष्ट विचारधारा

गाँधीजी की विचारधारा अत्यधिक विलक्षण थी, जो लोगों को आसानी से आकर्षित कर लेते थे। इसके निम्नलिखित महत्वपूर्ण पहलू थे-

- **सत्याग्रह :** इस पद्धति में संबंधित व्यक्ति अथवा व्यवस्था के विरूद्ध आक्रोश अथवा घृणा का भाव नहीं होता, वरन् सुधार के लिए एक मानवीय अपील होती है। अतः

प्रतिपक्षी के लिए भी इस प्रकार के आंदोलन का उग्र दमन करना अत्यधिक कठिन हो जाता है। एक राजनीतिक पद्धति के रूप में यह अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ, क्योंकि इसने अत्याधुनिक हथियारों को व्यर्थ बना दिया।

- **अहिंसा:** अहिंसा की अवधारणा को भारतीय संस्कृति में व्यापक स्वीकृति प्राप्त है। गाँधी जी ने सफलतापूर्वक इसका उपयोग राजनीति में किया जो अपने-आप में दुर्लभ पद्धति थी। अहिंसा की पद्धति जनआंदोलन के लिए अनुकूल थी। इसके माध्यम से गाँधीवादी आंदोलन में व्यापक भागीदारी संभव हुई। महिलाओं ने भी इसमें व्यापक भागीदारी निभायी। फिर अहिंसा की अवधारणा ने धनी वर्ग को भी यह आश्वासन दिया कि उनके विरूद्ध बल प्रयोग नहीं किया जाएगा। अत: गाँधीवादी आंदोलन में उनकी भी भागीदारी सुनिश्चित हुई।
- **स्वराज:** गाँधी के स्वराज की परिकल्पना भी अलग थी। जहाँ अधिकतर कांग्रेसी नेताओं के बीच स्वराज का अर्थ था राजनीतिक स्वतंत्रता, वहीं गाँधी के लिए पहले यह नैतिक स्वतंत्रता थी, फिर राजनीतिक स्वतंत्रता। इस प्रकार गाँधी की स्वराज विषयक संकल्पना अस्पष्ट थी, किंतु इसकी अस्पष्टता में ही इसका महत्व छिपा हुआ था क्योंकि विभिन्न वर्ग इसकी व्याख्या अपने ढंग से कर लेते थे।
- **पश्चिमी सभ्यता की आलोचना:**- उन्होंने पश्चिमी सभ्यता एवं पाश्चात्य आधुनिकता की आलोचना की। उन्होंने 'हिंद स्वराज' नामक पुस्तक में यह घोषित किया कि भारत ब्रिटिश के पैरों तले नहीं, बल्कि पश्चिमी सभ्यता के पैरों तले रौंदा जा रहा है। उनका आधुनिकता विरोधी दर्शन उन लोगों को आकर्षित कर रहा था जो आधुनिकता की दौड़ में पीछे छूट गये थे।
- **वर्ग समन्वयवाद:**- गाँधीजी के न्यास के सिद्धांत (Trusteeship Theory) को इस संदर्भ में देखा जा सकता है अर्थात् वे यह मानकर चलते थे कि पूँजीपति वर्ग को समाज के ट्रस्टी के रूप में काम करना चाहिए और अतिरिक्त धन लोककल्याण पर खर्च करना चाहिए। उनके वर्ग समन्वयवाद का राजनीतिक महत्व था। वे इसी आधार पर राष्ट्रीय आंदोलन में संयुक्त मोर्चा बना सके, अर्थात् पूँजीपति और श्रमिक तथा जमींदार एवं किसान, सभी को अपने आंदोलन से जोड़ सके।

गाँधी का विशिष्ट कार्यक्रम

- अनेक कांग्रेसी नेताओं के विपरीत, जिन्होंने पश्चिमी वेशभूषा को महत्व दिया था, गाँधी जी ने साधारण वेश-भूषा धारण की। वे जनसामान्य की तरह ट्रेन के तीसरे दर्जे में यात्रा करते थे। यही वजह है कि वे भारतीय किसानों के निकट पहुँच गए। उनका बोलचाल भी किसानों को आकर्षित करता था क्योंकि अपने भाषण में जहाँ-तहाँ वे रामायण की चौपाईयों को उद्धृत करते थे।
- गाँधी ने रचनात्मक ग्रामीण कार्यक्रम के माध्यम से, जिसमें प्रभात फेरी, चरखा, गाँव की सफाई, ग्राम पंचायत का गठन, छुआ-छूत का विरोध आदि शामिल था, लाखों भारतीय गाँवों को कांग्रेस की राजनीति से जोड़ दिया।
- गाँधी ने भारतीय समाज के बहुलवादी चरित्र को समझा और फिर उसी के अनुकूल उन्होंने अपना राजनीतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। अत: उनकी राजनीति वर्ग आधारित न होकर, जन आधारित हो गई।
- गाँधी का नजरिया व्यावहारिक था। अत: वे संघर्ष के साथ-साथ समझौता और वार्ता में भी विश्वास करते थे। यही वजह है कि चाहे कितनी भी प्रतिकूल परिस्थिति हो, वे अपने समर्थकों के लिए कुछ न कुछ रियायत प्राप्त कर ही लेते थे। अत: स्वाभाविक रूप में जनता गाँधीवादी नेतृत्व के प्रति आकर्षित होती गई।

अफवाहों की भूमिका

- गाँधी जी की प्रसिद्धि में अफवाहों ने भी भूमिका निभाई, क्योंकि भारतीय जनता ने सदा गाँधी की छवि को बड़ा करके देखा तथा उन्हें एक ऐसे मुक्तिदाता के रूप में प्रस्तुत किया जो उन्हें शोषक समूह से मुक्ति दिला सकता था।

भारतीय एवं विश्व राजनीति में गाँधी का योगदान एवं विरासत

- गाँधी ने भारतीय राजनीति में नवाचार (Innovation) लाया अर्थात् सत्याग्रह एवं अहिंसा की पद्धति को अपनाया।
- उन्होंने वैकल्पिक राजनीति की शुरूआत की अर्थात् उन्होंने मैकियावेली के यथार्थवाद को अस्वीकार कर धर्म (नैतिकता) पर आधारित राजनीति पर बल दिया।
- गाँधी के आगमन से पूर्व कांग्रेस का सामाजिक आधार सीमित था। इसे महज कुछ खास वर्गों का समर्थन प्राप्त था, किंतु गाँधी जी ने कांग्रेस को सामान्य जनता से जोड़ दिया। वस्तुत: उनके आगमन से पूर्व कांग्रेस की राजनीति महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मण, बंगाल के भद्रलोक तथा तमिल ब्राह्मणों तक ही सीमित थी, किंतु गाँधी जी ने इसे बिहार, संयुक्त प्रांत, गुजरात आदि अन्य अपरंपरागत क्षेत्रों में फैलाया। साथ ही कांग्रेस की राजनीति से नये वर्गों को जोड़ा।

- गाँधी जी के अंतर्गत राष्ट्रीय आंदोलन तात्कालिक सामाजिक मुद्दों से भी जुड़ गया। अत: राष्ट्रनिर्माण एवं समाज सुधार दोनों प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती रहीं। उन्होंने राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहन दिया तथा छुआ-छूत के विरूद्ध एक बड़ा संघर्ष आरंभ किया।
- उन्होंने पश्चिमी सभ्यता की आलोचना कर आधुनिकतावाद का वैकल्पिक मॉडल प्रस्तुत किया। उदाहरण के लिए, व्यक्तिवाद की जगह सामुदायिकता की भावना पर बल तथा मशीनीकरण की जगह मानव श्रम पर बल दिया।
- गाँधी जी के पश्चात् भी भारतीय राजनीति एवं विश्व राजनीति में गाँधीवाद की विरासत देखी जा सकती है। भारतीय राजनीति में यह विरासत भू-दान आंदोलन, चिपको आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन आदि के रूप में अभिव्यक्त हुई। दूसरी तरफ, विश्व राजनीति में मार्टिन लूथर किंग के आंदोलन, दक्षिण अफ्रीका में अल्बर्ट लूथली की राजनीति आदि पर गाँधीवाद की झलक देखी जा सकती है।

वर्तमान में गाँधीजी के विचारों का महत्व

- गाँधीजी ने हिंसा की संस्कृति से अपने को पृथक कर अहिंसा की पद्धति को अपनाया। इससे वर्तमान विश्व में धार्मिक उन्माद एवं आतंकवाद जैसी समस्या का निराकरण हो सकता है।
- वर्तमान में राज्य की शोषक एवं दमनात्मक मशीनरी को देखते हुए गाँधीजी के द्वारा दी गयी प्रशासनिक विकेन्द्रीकरण की अवधारणा उचित प्रतीत होती है क्योंकि उसमें सत्ता नीचे से ऊपर की ओर जाती है।
- वर्तमान विश्व अति मशीनीकरण की समस्या से जूझ रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस कुछ उच्च स्तर के रोजगारों के लिए नया खतरा बनकर आया है। ऐसी स्थिति में गाँधीजी के इस विचार का व्यापक महत्व दिखता है कि मशीन के द्वारा मानव श्रम का विस्थापन नहीं होना चाहिए।
- अति उत्पादन वर्तमान सभ्यता के लिए सबसे बड़ा खतरा बनकर आया है। यह पर्यावरण संकट से लेकर आतंकवाद आदि सभी समस्याओं की जड़ है। इसलिए कुछ विद्वान गाँधीजी को एक उत्तर आधुनिकतावादी चिंतक मानते थे। आगे वन्दना शिवा से लेकर बाबा आम्टे तक विभिन्न पर्यावरणवादियों को गाँधीजी के विचारों से प्रेरणा मिली।

गाँधीवादी राजनीति

क्षेत्रीय आंदोलन

- गाँधीजी ने सर्वप्रथम भारत में अपनी पहचान क्षेत्रीय आंदोलनों के माध्यम से बनायी थी; यथा- चंपारण सत्याग्रह (1917 ई.), अहमदाबाद मिल मजदूर आंदोलन (1918 ई.) तथा खेड़ा सत्याग्रह (1918 ई.)।

चम्पारण सत्याग्रह, अहमदाबाद और खेड़ा सत्याग्रह :-

- गाँधीजी ने अपना पहला आन्दोलन बिहार के **चम्पारण** में किया। राजकुमार शुक्ल के आमंत्रण पर गाँधी जी वहाँ गए। उन्होंने वहाँ तिनकठिया पद्धति के विरुद्ध आंदोलन छेड़ा। तिनकठिया पद्धति में उस क्षेत्र के प्रत्येक किसान से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह प्रत्येक 20 कट्ठा में 3 कट्ठा जमीन नील की खेती के लिए अलग कर दे। गाँधी जी का यह आन्दोलन सफल रहा और चम्पारण में तिनकठिया पद्धति का अंत हो गया।
- फिर 1918 ई. में **अहमदाबाद के मिल मजदूरों** के पक्ष में उन्होंने आंदोलन छेड़ा। यहाँ पर मिल मालिकों तथा मजदूरों में प्लेग बोनस को लेकर विवाद छिड़ा था। प्लेग का प्रकोप खत्म होने के पश्चात् मिल मालिक इसे समाप्त करना चाहते थे, जबकि मजदूर इसे जारी रखना चाहते थे। मिल मालिकों में से एक अंबालाल साराभाई, गाँधी जी के मित्र थे। उनकी मदद् से गाँधी जी ने अंतत: मजदूरों के इस मामले को एक ट्रिब्यूनल को सौंप देने को राजी कर लिया जिसने बाद में 35 प्रतिशत बोनस मिल मजदूरों को देने का आदेश दिया। इस तरह यह आन्दोलन सफल रहा।
- 1918 ई. में उन्होंने **गुजरात के खेड़ा** जिले के किसानों के पक्ष में आंदोलन छेड़ा। वस्तुत: खेड़ा जिले में फसल नष्ट हो गई थी, किंतु सरकार अकाल संहिता की अनुशंसा के आधार पर भू-राजस्व की राशि माफ करने के लिए तैयार नहीं थी। सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी के सदस्यों-विट्ठल भाई पटेल तथा गाँधी जी ने पूरी जाँच-पड़ताल के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला कि किसानों की माँग जायज है और राजस्व संहिता के तहत पूरा लगान माफ किया जाना चाहिए।
- इस आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गुजरात सभा ने। इस वर्ष गाँधी जी इसके अध्यक्ष थे। इस आंदोलन में उन्हें इन्दुलाल याज्ञिक का भी सहयोग मिला। यहाँ भी गाँधी जी का आंदोलन सफल रहा।

इन आंदोलनों का निम्नलिखित लाभ सामने आया-

- इससे सामान्य भारतीय को गाँधीवादी राजनीति में विश्वास होने लगा। उन्हें लगा कि अब तक भारतीय नेता केवल कहते थे, परन्तु वास्तव में गाँधीजी हमारे लिए कुछ करते भी हैं।
- सबसे बढ़कर इन आंदोलनों के मध्य गाँधी के अंतर्गत युवा नेताओं का एक वर्ग तैयार हो गया। इन्होंने भावी गाँधीवादी आंदोलन में भी अहम् भूमिका निभाई। दूसरे

शब्दों में, बिहार आन्दोलन में गाँधी को श्रीकृष्ण सिंह, अनुग्रह नारायण सिंह, भूलाभाई देसाई, डॉ० राजेंद्र प्रसाद आदि का समर्थन मिला। उसी प्रकार गुजरात आंदोलन के मध्य गाँधी को वल्लभ भाई पटेल, इंदुलाल याज्ञिक, शंकरलाल बैंकर आदि का सहयोग मिला।

रॉलेट सत्याग्रह

- अखिल भारतीय नेता के रूप में गाँधी जी की सबसे पहली पहचान रॉलेट सत्याग्रह के समय बनी। 10 सितंबर, 1917 ई. को ब्रिटिश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में भविष्य में क्रांतिकारी गतिविधियों को रोकने तथा कानूनी सुधारों की रूपरेखा प्रस्तुत करने के लिये सेडीशन समिति गठित की गई थी। सरकार ने तमाम विरोधों के बावजूद इसको कानूनी रूप प्रदान कर दिया।
- रॉलेट अधिनियम एक काला कानून था, जिसके तहत किसी भी व्यक्ति को किसी भी समय गिरफ्तार किया जा सकता था। इसका नारा था 'कोई वकील नहीं, कोई दलील नहीं, कोई अपील नहीं'। गाँधीजी को उम्मीद थी कि युद्ध के पश्चात् भारत को स्वशासन मिलेगा, किंतु भारत को मिला रॉलेट अधिनियम।
- गाँधी ने इस अधिनियम के विरूद्ध एक अखिल भारतीय आंदोलन छेड़ने का निर्णय लिया। इसके लिए एक 'अखिल भारतीय सत्याग्रह समिति' का गठन हुआ तथा 6 अप्रैल, 1919 को रॉलेट सत्याग्रह आरंभ हुआ। चूँकि प्रथम विश्व युद्ध के मध्य, सरकार के द्वारा पंजाब से जबरन भर्ती किये जाने की नीति के कारण पंजाब में पहले से ही असंतोष व्याप्त था। अत: पंजाब में यह आंदोलन उग्र एवं हिंसक हो गया और फिर 13 अप्रैल, 1919 को जालियाँवाला बाग हत्याकाँड हुआ। अत: गाँधी ने 18 अप्रैल, 1919 को रॉलेट सत्याग्रह आंदोलन को वापस ले लिया, परन्तु इस आंदोलन से निम्नलिखित लाभ प्राप्त हुए–
  - यद्यपि यह आंदोलन तीन वर्ष आगे तक रहा, परन्तु ब्रिटिश द्वारा किसी को गिरफ्तार करने का साहस नहीं हुआ।
  - इस आंदोलन से गाँधीजी को जो अनुभव मिला, उसका उपयोग वे अगले आंदोलन में कर सके।

■■■

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR